

## Methods of developmental psychology

प्रत्येक विषय की अपनी विषय वस्तु तथा विशिष्ट अध्ययन विधियाँ होती हैं। विकासवात्मक मनोविज्ञान की विषय-वस्तु, सिद्धांतों और अध्ययन विधियों पर मनोविज्ञान के विकास का काफी प्रभाव पड़ा है। आधुनिक मनोविज्ञान के विकास के साथ विकासवात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापकता और विविधता आयी है। इन विधियों के द्वारा मानव विकास से संबंधित महत्वपूर्ण ढंख एवं मुद्दोंकोण प्रस्तुत किए जाते हैं। विकासवात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत मनोविज्ञान की सभी विधियों का प्रयोग संभव नहीं है। क्योंकि बच्चों के विकास तथा मानव-विकास की विभिन्न अवस्थाओं में सभी विधियों का उपयोग नहीं किया जा सकता। मानव विकास की विभिन्न अवस्थाओं जैसे - prenatal stage (जर्मिनालीन) एवं शैशवावस्था में वैदिक विकास के अध्ययन के लिए observation (निरीक्षण विधि) method उपयोगी होती है। per-childhood (पूर्व बाल्यावस्था) के विकास के अध्ययन में प्रत्यक्ष निरीक्षण-विधि का उपयोग बहुत संभव के लिए किया जाता है। उसके late childhood (उत्तर बाल्यावस्था), adolescence, एवं adulthood (वृद्ध्यावस्था) के विकासवात्मक प्रवृत्तियों की जानकारी के लिए method of correlation, tests, questionnaire (प्रश्नावली) एवं interview विधि का उपयोग लाभकारी होता है। मानव-विकास की विभिन्न अवस्थाओं में adjustmental समस्याओं के अध्ययन में चरित्र शिष्टाचार विधि एवं mental tests का उपयोग किया जाता है। आजकल के समय में विकासवात्मक मनोविज्ञान में निम्न विधियाँ प्रमुख हो रही हैं।

## Observation method

### Nature

निरीक्षण विधि सभी विज्ञानों की प्राचीनतम विधि है। व्यवहारवाद की स्थापना के साथ मनोवैज्ञानिक Watzson, (जे.डी. वॉरसन, 1913) ने मनोविज्ञान की विधि के रूप में अन्तर्निरीक्षण के स्थान पर निरीक्षण विधि को स्वीकार किया। इस विधि के द्वारा बालक के व्यवहारों का निरीक्षण किया जाता है। अपने निरीक्षण के आधार पर निरीक्षणकर्ता एक विशाल रिपोर्ट तैयार करता है और उसका विश्लेषण कर बालक के व्यवहार के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है। निरीक्षण विधि का वहुनिक स्वल्प प्रदान करने के लिए बालक के व्यवहार का विभिन्न समय और परिस्थितियों के अनुसार निरीक्षण किया जाता है। कई निरीक्षणों द्वारा एक साथ मिलकर बालक के व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है जिसके कारण इस विधि की

वस्तुनिष्ठ निरीक्षण विधि (Objective observational method) करा जाता है। इस विधि के द्वारा बालक के व्यवहार का निरीक्षण दो प्रकार की परिस्थितियों में किया जाता है जिनसे निगमित एवं स्वाभाविक निरीक्षण (Controlled and natural observation) के नाम से जाना जाता है।

### (1) Controlled observation

इसके अंतर्गत बालक के व्यवहार का निरीक्षण व्यवस्थित एवं निगमित परिस्थितियों में किया जाता है। इस विधि का उपयोग सबसे पहले जर्मनी में नवजात शिशुओं की ज्ञानात्मक प्रतिक्रियाओं (Sensory response) के अध्ययन के लिए किया गया। मनोवैज्ञानिक Gesell (गैसल) ने Movings picture camera के द्वारा बच्चों की प्रतिक्रियाओं का चित्र लेकर स्वाभाविक एवं संवेगात्मक व्यवहारों व खेलकूद की क्रियाओं का निरीक्षणार्थक अध्ययन किया।

### (2) Natural observation

इस विधि के अंतर्गत बालकों द्वारा किए जाने वाले व्यवहारों का स्वाभाविक रूप परिस्थिति में निरीक्षण किया जाता है। अर्थात् इसमें जैसे व्यवहारों का निरीक्षण सम्मिलित होता है, जो प्राकृतिक रूप से वास्तविक परिस्थिति में घटित होते हैं। Chowdhury Chowdhury के अनुसार स्वाभाविक निरीक्षण का मतलब - माता-पिता तथा दूसरे बड़े व्यक्तियों द्वारा बालक को दिन-प्रतिदिन की चेष्टाओं एवं क्रिया-कलापों पर ध्यान देना है। जिसमें बालक द्वारा किये जाने वाले व्यवहार जैसे - परिवार सम्बन्ध - पाल-पढ़ाई एवं खेल के मैदान, उठना-बैठना, खेलना-सूचना, हान-पैर धिलाना-डुलाना एवं दूसरे से की-गयी बातचीत सम्मिलित होती है। इस विधि में निरीक्षक को द्वारा बालक द्वारा किये जा रहे व्यवहार एवं क्रियाओं को रोका नहीं जाता है। वह बालक का व्यवहार जैसा व किस रूप में देखता है उसी के अनुरूप रिपोर्ट तैयार करता है।

उपर्युक्त से अन्तर्गत जो आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा निरीक्षण के अध्ययन की सुविधा एवं सरलता के लिए दो प्रकार की और परिस्थितियों का वर्णन किया जाता है जिनसे participant and non-participant (सहभागी एवं असहभागी) निरीक्षण के नाम से जाना जाता है।

### (1) Participant observation

इस विधि के अंतर्गत निरीक्षण करने वाले बालक के जिन व्यवहारों का निरीक्षण करता है उनमें participating

कला है। प्रायः निरीक्षणकर्ता बालकों के कार्यों को उनके साथ मिलकर करता है और साथ ही साथ उनके व्यवहार का प्रेक्षण भी करता है। जैसे बालकों के खेल संबंधी कार्यों का निरीक्षण करने के लिए निरीक्षक द्वारा बालकों के साथ मिलकर खेलना सहभागी निरीक्षण विधि का उदाहरण होगा।

Non-Participant observation → इस विधि में निरीक्षण कर्ता बच्चों के जिस व्यवहार का निरीक्षण करता है उनमें सहभागिता नहीं निभाता है बल्कि दूर से ही निरीक्षण करके उनके द्वारा किए जा रहे व्यवहार का अध्ययन करता है। इस प्रकार का निरीक्षण शारीरिक, सामाजिक एवं औद्योगिक क्षेत्रों में प्रायः प्रयुक्त होता है।

### Sub Method of control and Informal observation method

मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों में अनेक प्रकार की विधियों की उपयोगिता विकसित की गयी है जिनमें स्वाभाविक एवं नियंत्रित विधि की उप-विधियों के नाम से जाना जाता है। जिनकी व्याख्या निम्नोक्तित इत प्रकार है -

(1) Situational analysis (परिचित विश्लेषण) → इस विधि की व्याख्या अनेक प्रकार की परिचितियों एवं वातावरण में घटने वाली बच्चों (बालक) के व्यवहार का निरीक्षण करके किया जाता है। जिनसे प्राप्त व्यवहार (प्रदर्शनों) के आधार पर बालकों के व्यवहार के संदर्भ में निष्कर्ष निकाला जाता है। ऐसी परिचितियों बालक के परिवार, शास - पहास, विद्यालय, मित्र मंडली एवं खेल-रूढ़ के मैदान आदि से संबंधित होता है जिसमें बालक का व्यवहार छिपित होता है।

(2) Time-sampling (समय-प्रतिदर्शन) → इस विधि के अंतर्गत एक निश्चित एवं निर्धारित समय के अन्तर्गत बालक द्वारा किये गये व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है और निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए अनेक बालकों द्वारा किये गये व्यवहारों का निरीक्षण करके तुलनात्मक रूप से सामान्यीकरण (generalization) किया जाता है। उदाहरण के लिए कार्य की अपाधि, खेलने की अपाधि निर्धारित करके इसके अन्तर्गत छिपित बालक के व्यवहार का निरीक्षण करना।

(3) Community survey (समुदाय सर्वेक्षण) → इस विधि के द्वारा प्रत्येक किसी बालक के चरित्र, आचरण एवं आविर्भाव का अध्ययन करना है।

तो उस समय एवं समुदाय तथा मुहल्ले में रहने वाले दूसरे बालकों के चोट, आचरण एवं व्यवहार का तुलनात्मक रूप से निरीक्षण किया जाता है जिसमें बालक रहता है। इसीलिए इस विधि को तुलनात्मक विधि भी कहा जाता है। इस विधि के द्वारा यह पता चलता है कि बालक के व्यवहार के विभिन्न पहलुओं पर किसका प्रभाव पड़ता है।

(4) Moving picture camera method (चलचित्र विधि) → इस विधि का

प्रयोग मनोवैज्ञानिक Gessell (गसेल) द्वारा बालकों के व्यवहारों के निरीक्षण के लिए सर्वप्रथम किया गया। इसमें बच्चों के अभिव्यक्तियों एवं अंतःक्रियाओं (interactions) के चित्र लिखे जाते हैं जिसके आधार पर बच्चों द्वारा किए गये व्यवहारों का जाल्पा भी जाती है।

अतः उपर्युक्त विधियों के वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि निरीक्षण विधि के अन्तर्गत बालक द्वारा किए गये व्यवहारों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष (Direct-indirect) रूप से निरीक्षण करने के व्यवहार का अध्यायन किया जाता है। जिसमें स्वाभाविक प्रेरणा अथवा परिचित विश्लेषण विधि सबसे महत्वपूर्ण है। इस विधि की प्रमुख विशेषता यह है कि बच्चों के व्यवहारों के अध्यायन में बिना किसी प्रकार के manipulation (प्रोड-गोड) किए ही उनका वास्तविक घटित स्वरूप में ही अध्यायन किया जाता है। इस विधि का प्रयोग करने मनोवैज्ञानिक (जेन्स-श्व जेन्स) JOHNS बचल JOHNS, 1920 ने यह स्पष्ट किया कि बच्चों में भावनात्मक संबंध जन्मजात न होकर अर्जित (acquired) प्रकार का होता है।

Merits of observation method

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार निरीक्षण विधि में निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती हैं जो इस प्रकार हैं —

- (I) इस विधि से व्यवहार का objective (वस्तुनिष्ठ) एवं impersonal (अव्यक्तिगत) निरीक्षण होता है।
- (II) इस विधि का क्षेत्र व्यापक है। जिससे इसका प्रयोग छोटे आयु के बच्चों, बालकों, पक्षियों, असामान्य व्यक्तियों, विकलांगों एवं पशुओं पर किया जा सकता है।
- (III) इस विधि द्वारा एक ही समय में बहुत से व्यक्तियों का निरीक्षण किया जा सकता है।
- (IV) इस विधि से प्राप्त प्राप्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विश्लेषण सरल होता है।
- (V) इस विधि से प्राप्त परिणाम विश्वसनीय एवं प्रामाणिक होते हैं।

जिसका इलाका आसानी से सामान्यीकरण किया जा सकता है।

### Demerits of observational method

उपर्युक्त विशेषताओं के अलावा निरीक्षण विधि की निम्न लिखित कमियाँ एवम दोष भी पाये जाते हैं जो निम्नांकित हैं:-

- (I) इस विधि में जोचरों की भौतिक विशेषताओं के कारण उस जोचर या घटना में विकृति उत्पन्न हो जाती है।
- (II) इस विधि में निरीक्षणकर्ता की attitudes, needs एवं पूर्वाग्रहों का प्रभाव प्राप्त होता है। जिसके कारण इस विधि का निरीक्षण प्रवृत्त न होकर आत्मनिष्ठ हो जाता है।
- (III) इस विधि से प्राप्त परिणामों में उचित कारण-संबंध की कमी होती है।
- (IV) इस विधि के द्वारा बालक या अल्प वयस्क प्राणी या पशुओं की मानसिक क्रियाओं की जानकारी नहीं हो पाती।
- (V) व्यवहार का निरीक्षण करने में प्रयुक्त उपकरणों से प्रयोज्य के व्यवहार में कृत्रिमता आ जाती है।
- (VI) इस विधि द्वारा किसी एक तथ्य का निरीक्षण किसी कारणवश नहीं हो पाये तो पुनः उस तथ्य या घटना को पुनरावृत्ति नहीं हो पाती है।

उपर्युक्त इन कमियों के होते हुए भी निरीक्षण विधि बालक के व्यवहार संगतता (behaviour consistency) का अध्ययन करने की सबसे महत्वपूर्ण विधि है।

